NCERT Solutions For Class 12 Hindi Aroh (Prose)

CH 10 – भक्तिन

1. भक्तिन अपना वास्तविक नाम लोगों से क्यों छुपाती थी? भक्तिन को यह नाम किसने और क्यों दिया होगा?

उत्तर: भक्तिन अपना वास्तविक नाम लोगों से इसलिए छुपाती थी क्योंकि उसका असली नाम लछमिन था जिसका वास्तविक अर्थ लक्ष्मी होता है। अर्थात धन की देवी। परंतु लक्ष्मी के नाम से उसका दूर-दूर तक कोई संबंध नहीं था। लक्ष्मी बहुत गरीब एवं उसकी दशा अत्यधिक दैनिय थी। इसलिए लक्ष्मी और उसके नाम का कोई मेल नहीं था।

लेखिका महादेवी जी ने ही लक्ष्मी को भक्तिन का नाम दिया था। लेखिका ने जब लक्ष्मी को पहली बार देखा था तो उसके गले में कंठी माला एवं उसने अपना शीर मुंडवा रखा था। लेखिका ने लक्ष्मी की वेशभूषा एवं रहन-सहन के तरीके को देखते हुए उसका नाम भक्तिन रख दिया। लेखिका के प्रति लक्ष्मी की सेवा भावना को देखते हुए लेखिका ने उसे या नाम दिया था।

2. कन्या रत्न पैदा करने पर भक्तिन पुत्र महिमा में अंधी अपनी जेठानियों द्वारा घृणा व उपेक्षा का शिकार बनी। ऐसी घटनाओं से ही अक्सर यह धारणा चली है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन है। क्या इससे आप सहमत है?

उत्तर: पाठ के अनुसार स्त्री ही स्त्री की दुश्मन है यह कथन पूर्ण रूप से सत्य है। चुकि भक्तिन की जेठानियों ने पुत्रों को एवं भक्तिन ने तीन पुत्रियों को जन्म दिया था। इसलिए उसकी सास और जेठानिया भक्तिन के साथ बुरा व्यवहार करती थी। उसकी जेठानिया सारा दिन घर पर आराम करती थी एवं भक्तिन और उसकी बेटियों से घर का सारा काम करवाती थी। साथ ही खेतों में भी काम करवाती थी। उसकी जेठानिया अपने पुत्रों को अच्छा भोजन एवं भक्तिन की पुत्रियों को बचा हुआ भोजन दिया करती थी। अतः उसकी सास और जेठानियों द्वारा भक्ति और उसकी पुत्रियों के साथ भेदभाव किया जाता था।

3. भक्तिन की बेटी पर पंचायत द्वारा जबरन पति थोपा जाना दुर्घटना भर नहीं बल्कि विवाह के संदर्भ में स्त्री के मानवाधिकार (विवाह करें या ना करें अथवा किससे करें) इसके स्वतंत्रता को कुचले रहने की सदियों से चली आ रही सामाजिक परंपरा का प्रतीक है। कैसे?

उत्तर: भक्तिन की बेटी के साथ उसके जेठ के साले द्वारा दुष्कर्म किए जाने पर जब पंचायत ने बिना भक्तिन की विधवा बेटी की बात सुने जबरन दुष्कर्म करने वाले व्यक्ति के साथ उसका विवाह तय कर दिया। यह हमारे समाज की ऐसी मानसिकता को दर्शाता है जिसमें सदियों से चली आ रही कुप्रथा ने आज भी हमारे समाज को जकड़ रखा हों। पंचायत द्वारा दुष्कर्म करने वाले व्यक्ति को सजा देने के बजाय भक्तिन की बेटी के साथ विवाह करवा कर दुष्कर्म करने वाले को प्रोत्साहन दिया है एवं

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

जबरन भक्तिन की विधवा बेटी पर अपना फैसला थोप कर स्त्री के मानवाधिकार को छिन्न-भिन्न कर दिया है। समाज की कुप्रथा का शिकार होकर ना जाने कितनी ही स्त्रियों का जीवन नर्क हो गया है।

4. भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं लेखिका ने ऐसा क्यों कहा होगा?

उत्तर: भक्तिन एक भोली भाली एवं बुद्धिमान स्त्री थी। भक्तिन लेखिका के प्रति सेवा की भावना रखती थी। परंतु भक्ति में कुछ दुर्गुण भी थे। जैसे-

- लेखिका द्वारा इधर-उधर पैसे रखे जाने पर भक्ति उन पैसों को भंडार घर की मटकी में छुपा दिया करती और पैसों के बारे में पूछे जाने पर भक्तिन इसे चोरी नहीं मानती थी।
- भक्ति अपनी बातों को सही सिद्ध करने हेतु लेखिका से बेवजह की तर्क वितर्क किया करती।
- भक्तिन लेखिका के गुस्से से बचने के लिए बात-बात पर लेखिका से झूठ बोला करती थी।
- भक्तिन शास्त्रों में लिखी बातों की व्याख्या अपने अनुसार किया करती थी।

5. भक्तिन द्वारा शास्त्र के प्रश्नों को सुविधा से सुलझा लेने का क्या उदाहरण लेखिका ने दिया है?

उत्तर: भक्तिन के अनुसार शास्त्रों में ऐसा लिखा है 'तीरथ गए मुंडाए सिद्ध'। जिसकी व्याख्या वह अपने अनुसार करती है कि शास्त्रों में सिर मुंडवाना सही माना जाता है। लेखिका को भक्तिन का सिर मुंडवाना पसंद नहीं था जिससे वह भक्तिन को इसके लिए मना करती थी परंतु भक्तिन अपने सिर मुंडवाने को शास्त्रों लिखी बातों से जोड़ देती।

6. भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती हो कैसे हो गई?

उत्तर: भक्तिन गांव की रहने वाली स्त्री थी। जिससे उसका रहन-सहन पूर्ण रूप से देहाती था। वह लेखिका को खाने में गाढ़ी दाल, मोटी रोटी, मकई की लपसी, भुट्टे के हरे-हरे दाने की खिचड़ी एवं बाजरे के तिल वाले ठंडे पुए खिलाती थी। महादेवी जी को धीरे-धीरे इन सब चीजों की आदत हो गई और उनके स्वाद में परिवर्तन आ गया। जिससे महादेवी जी भक्तिन के रहन-सहन के अनुसार स्वयं ही ढल गई।

अभ्यास-पाठ के आसपास

1. आलो आंधारि की नायिका और लेखिका बेबी हालदार और भक्तिन के व्यक्तित्व में आप क्या समानता देखते हैं?

उत्तर: आलो आंधारि की नायिका और लेखिका बेबी हालदार और भक्तिन के व्यक्तित्व में निम्न समानताएं हैं :-

- दोनों ही कहानियां घर में काम करने वाली नौकरानियों के जीवन पर आधारित है।
- कहानी की दोनों ही नायिकाओं को अपने परिवार एवं समाज की उपेक्षा एवं घृणा का सामना करना पड़ा।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

- दोनों ही कहानियां भिन्न थी परंतु दोनों ही नायिकाओं ने अपने स्वाभिमान और आत्मरक्षा के लिए अपने जीवन में संघर्ष पूर्ण स्थिति का सामना किया।

2. भक्तिन की बेटी के मामले में जिस तरह का फैसला पंचायत ने सुनाया वह आज भी कोई हैरतअंगेज बात नहीं है। अखबारों या टी.वी समाचारों में आने वाली किसी ऐसी ही घटना को भक्तिन के उस प्रसंग के साथ रखकर उस पर चर्चा करें।

उत्तर: आज भी हमारे समाज में ऐसी रूढ़ीवादी मान्यताएं जीवित है। जहां कुप्रथाओं को परंपरा का नाम दे दिया जाता है। आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में गांव से जुड़े मसले पर पंचायत ही अपना फैसला सुनाती है एवं इस बीच किसी को बोलने की अनुमति नहीं होती है। हमारे समाज में इन्हीं अंधविश्वास एवं कुप्रथाओं को रीति-रिवाजों का नाम दे दिया जाता है।

अभ्यास- भाषा की बात- 1

नीचे दिए गए विशिष्ट भाषा-प्रयोगो के उदाहरणों को ध्यान से पढ़िए और इनकी अर्थ छवि स्पष्ट कीजिए :-

1. पहले कन्या के दो संस्करण और कर डालें।

उत्तर: भक्तिन ने एक पुत्री को जन्म देने के बाद दोबारा एक और पुत्री को जन्म दिया था। जिस प्रकार पूर्व प्रकाशित पुस्तक को पुनः प्रकाशित किया जाता है, उसी प्रकार भक्तिन ने लगातार एक के बाद एक तीन पुत्रियों को जन्म दिया। इसलिए लेखिका द्वारा भक्तिन के लिए ऐसे शब्द कहे गए थे।

2. खोटे सिक्कों को टकसाल जैसी पत्नी।

उत्तर: भक्तिन द्वारा तीन पुत्रीयों को जन्म देने के पश्चात उसकी सास और उसकी जेठानिया उसे ताने दिया करती थी। जिस प्रकार सिक्के टकसाल में बनाए जाते हैं, उसी प्रकार भक्तिन ने तीन पुत्रियों को एक के बाद एक जन्म दिया था। इसलिए भक्तिन इनको सिक्कों की टकसाल कहा गया है।

3. अस्पष्ट पुनरावृतियाँ और स्पष्ट सहानुभूतिपूर्ण।

उत्तर: भक्तिन जब अपने पिता से मिलने उनके पास पहुंची तब उसे अपने पिता की मृत्यु की बात का कोई ज्ञान नहीं था। भक्तिन को देखकर गांव के लोग एक दूसरे के कान में बेचारी लक्ष्मी आई है कहकर फुसफुस आने लगे। यह फुसफुसाहट पूर्ण रूप से अस्पष्ट थी इसलिए महादेवी जी ने इसे स्पष्ट पुनरावृति कहा है। परंतु भक्तिन को देख लोग उसे सहानुभूति देने लगते हैं। जो पूर्ण रूप से स्पष्टता से हो रहा था। इसलिए लोगों द्वारा स्पष्ट रूप से भक्तिन को सहानुभूति दिए जाने को महादेवी जी ने पूर्व स्पष्ट सहानुभूति कहा है।

अभ्यास भाषा की बात -2

'बहनोई' शब्द 'बहन (स्त्री.)+ ओई' से बना है। इस शब्द में हिंदी भाषा की एक अनन्य विशेषता प्रकट हुई है। पुलिंग शब्दों में कुछ स्त्रि-प्रत्यय जोड़ने से स्त्रीलिंग शब्द बनने की एक समान प्रक्रिया कई भाषाओं में दिखती है, पर स्त्रीलिंग शब्द में कुछ पुलिंग प्रत्यय जोड़कर पुलिंग शब्द बनाने की घटना

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रायः अन्य भाषाओं में दिखाई नहीं पड़ती है। यहां पुलिंग प्रत्यय 'ओई' हिंदी की अपनी विशेषता है। ऐसे कुछ और शब्द उनमें लगे पुलिंग प्रयोग को हिंदी तथा और भाषाओं में खोज करें।

उत्तर: जिस प्रकार बहन+ओई = बहनोई एक शब्द है उसी प्रकार ननंद+ ओई = नंदोई भी एक शब्द है।

प्रश्न- अभ्यास भाषा की बात- 3

पाठ में आए लोकभाषा के इन संवादों को समझ कर इन्हें खड़ी बोली हिंदी में डालकर प्रस्तुत कीजिए।

1. ई काउन बड़ी बात आय। रोटी बनाय जानित है, दाल रांध लेइत है, साग सब्जी छँऊक सकित है आउर बाकी का रहा।

उत्तर: यह कौन सी बड़ी बात है। रोटी बनाना जानती हूं दाल बना लेती हूं साग-भाजी छौंक लेती हूं और क्या शेष बचा?

2. हमारे मालकिन तौ रात दिन किताबयिन मा गड़ी रहती है। अब हमहूँ पढे लागब तो घर- गिरस्ती कउन देखी सुनी।

उत्तर: हमारी मालकिन तो रात दिन किताबों में डूबी रहती है। हम भी यदि पढ़ने लिखने लगे तो घर गिरस्ती का काम कौन संभालेगा।

3.ऊ विचारअउ तौ रात-दिन काम मा जुकी रहती है, अउर तुम पचै घूमती फिरती हौ, चलो तनिक हाथ बटाई लेउ।

उत्तर: वह बेचारी तो रात दिन काम में लगी रहती है और तुम लोग घूमते फिरते हो चलो थोड़ी मेरी मदद कर दो।

4. तब ऊ करिहैं धरिहैं ना बस गली-गली गाउत बजाउत फिरिहैं।

उत्तर: तब उसके पास कोई कार्य नहीं होगा बस गली-गली में बजाता गाता फिरता होगा।

5. तुम पचै का का बताईययहै पचास बरिस से संग रहित हैं।

उत्तर: तुम्हें मैं क्या क्या बताऊं, पचास वर्षों से यही साथ रहती हूं।

6. हम कुकरी बिलारी ना हाऊ, हमार मन पुसाई तौ हम दूसरा के जाब नाहिं त तुम्हार पचै की छाती पै होरहा भूँजब और राज कर, समुझे रहौ।

उत्तर: मैं कोई जानवर (कुत्ते बिल्ली) नहीं हूँ। मेरा मन चाहेगा तो मैं दूसरे के यहां जाऊँगी नहीं तो यही रहूंगी और राज करूंगे समझ लेना।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in